प्रश्न -1- तर्कसंग्रह के अनुसार कारण का लक्षण देते हुए उनके भेदो का निरूपण कीजिए ?

उत्तर - असाधारण कारण को करण कहते हैं "असाधारण कारणं करणम्" यहाँ असाधारण शब्द साधारण कारण काल और आकाश की व्यावृत्ति के लिए है। क्योंकि काल और आकाश कार्य सामान्य के प्रति कारण हैं मात्र तत्व कार्य के प्रति नहीं असाधारण कारण उसे कहते हैं जिसके न होने पर कार्य की कभी भी उत्पत्ति न हो सके साथ असाधारण कारण तब तक करण नहीं होगा जब तक वह व्यापार युक्त न हो जैसे दण्ड घट का असाधारण कारण है और भ्रमि रूप व्यापार वाला भी है तथा परशु जब वृक्ष को काटता है तो वह करण होता है। और परशु तथा लकड़ी का परस्पर संयोग व्यापार है। क्योंकि वह परशु से उत्पन्न होता है और छेदन की उत्पत्ति का कारण है।

कारण का लक्षण देते हुए आचार्य अन्नम्भट्ट ने लिखा है। कि 'कार्य नियत पूर्व वृत्ति कारणम्' अर्थात उत्पन्न होने वाले पदार्थ से निश्चित रूप से पूर्ववर्ती पदार्थ को कारण कहते हैं। यहां अन्नम्भट्ट ने कार्य के से एकदम पूर्व कारण की स्थिति बतायी है। क्योंकि कार्य से पूर्व अर्थात घड़े के निर्माण से पहले उसको बनाने के लिए मिट्टी लाने वाला गधा भी है अतः इनपर लक्षण की अतिव्याप्ति रोकने के लिए नियत विशेषण पूर्ववृत्ति के साथ लगाया गया है। क्योंकि गधा डण्डा आदि पूर्ववर्ती

Scanned by CamScanner

होते हुए भी मिट्टी अवश्यम्भावी नहीं है कि इनके द्वारा ही आंशिक रूप से मिट्टी से घड़ा बनेगा।

कार्य का लक्षण देते हुए आचार्य ने लिखा है कि "कार्य प्रागभाव प्रतियोगि" अर्थात् अपनी उत्पत्ति के पूर्व उत्पन्न विद्यमान अभाव का प्रतियोगी हो अर्थात् जो पूर्व में नहीं था किन्तु बाद में हो गया। वह कार्य है जैसे घड़ा पूर्व में नहीं था अतः उसका प्रागभाव है वह उत्पन्न हो गया अतः वह प्रागभाव का प्रतियोगी है। इसलिए यहां घड़ा कार्य है। प्रागभाव अनादि के अन्त सहित है यही कारण है कि घड़ा के उत्पन्न होते ही प्रागभाव का अन्त हो गया जिससे घड़ा प्रागभाव का प्रतियोगी है।

कारण तीन प्रकार का होता है—

I समवाय कारण।
II असमवाय कारण।
III निमित्त कारण।

1. समवाय कारण — "यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत् समवायिकारणम्" यथा तन्तवः पटस्य पटश्च स्वगतरूपादेः। अर्थात् जिसमें समवाय सम्बन्ध से रहकर कार्य उत्पन्न होता है उसे समवाय कारण कहते हैं। जैसे तन्तु अपने में समवेत होकर उत्पन्न हुए पट का समवाय कारण है। इसी प्रकार पट अपने में समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न अपने रूप का समवाय कारण है।

प्रस्तुत लक्षण में यत्समवेतं कार्यं उत्पद्यते पद की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि समवाय कारण के लक्षण में समवेत पद न देने से चक्र आदि में अतिव्याप्ति होती इसलिए केवल यस्मिन् पद का प्रयोग न करके यत् समवेतं पद कहा गया है। जैसे चक्र में घट समवाय सम्बन्ध से नहीं है अपितु संयोग सम्बन्ध

वर्तमान है। घट समवाय सम्बन्ध से केवल अपने अवयव भूत दोनों कपालों में रहता है अतः कपाल द्वय ही घट के समवायि कारण हुए इसी प्रकार पट के समवायि कारण उसके अवयव भूत तन्तु हुए न कि छुरी वेमा इत्यादि।

2. असमवायि कारण → कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतं सत् कारणमसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्य तन्तुरूपं पटरूपस्य अर्थात् कार्य अथवा कारण के साथ एक पदार्थ में समवाय सम्बन्ध से रहता हुआ कारण असमवायि कारण है जैसे- तन्तुसंयोग पट का और तन्तुरूप पटरूप का असमवायि कारण है। अर्थात् असमवायि कारण वह है जो समवायि कारण से सम्बन्ध रखता हो और जिसमें कारण के लक्षण घटित होते हैं जैसे कार्य पट के साथ एक पदार्थ तन्तु में समवाय सम्बन्ध से वर्तमान होकर तन्तु संयोग पट का असमवायि कारण हुआ। इसी प्रकार पटरूप कारण पट के साथ एक पदार्थ तन्तु के रूप में समवाय सम्बन्ध से निवर्तमान होकर पटरूप का असमवायि कारण हुआ तन्तु रूप समवायि कारण द्रव्य ही होता है। लेकिन असमवायि कारण गुण एवं कर्म होता है।

3. निमित्त कारण - "तदुभयभिन्नकारणं निमित्तकारणम्" यथा तुरीवेमादिकं पटस्य। अर्थात् समवायि तथा असमवायि कारण से भिन्न होकर जो कारण है उसे निमित्त कारण कहते हैं। जैसे छुरी और वेमा आदि पट के निमित्त कारण हैं।

प्रस्तुत लक्षण में समवायि कारण तथा असमवायि कारण में अतिव्याप्ति हटाने के लिए तदुभय भिन्न पद का प्रयोग किया गया है विशेषादि में अतिव्याप्ति हटाने के लिए विशेष तथा अणु परिमाण आदि किसी के कारण नहीं निमित्त कारण का

Scanned by CamScanner

उदाहरण है। वेमा- यद्यपि वेमा अपने रूपादि गुणों के प्रति समवाय कारण है। तथापि वह पट के प्रति समवाय कारण नहीं है। क्योंकि उसमें समवेत होकर पट उत्पन्न नहीं होता। वह पट का असमवाय कारण तन्तुओं में प्रत्यासन्न नहीं है फिर भी वेमा पट का कारण है। क्योंकि वह नियत रूप से पट का पूर्वभावी है। अतः वेमा को पट का निमित्त कारण कहा गया है। यह दो प्रकार का होता है। ① चेतन निमित्त कारण ② अचेतन निमित्त कारण तुरी वेमा आदि अचेतन निमित्त कारण हैं और तन्तुवाय (जुलाहा) कुम्हार आदि चेतन निमित्त कारण हैं।

— दीपक कुमारी